ISSN - 2229 - 4929

अक्षर वाङ्मय

४ मार्च २०२०

नारी विमर्श

विशेषांक

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

संपादक

डॉ. नानासाहेब सर्यवंशी

— अनुक्रमणिका —

(संस्कृत विभाग)

अ.क्र.	संशोधन पेपरचा विषय	लेखकाचे नाव	पान क्र.
1.	भासाच्या नाटकातील बहुआयामी स्त्री पात्रे	स्नेहा महेंद्रनाथ शिवलकर	175
2.	निसर्गाचे स्त्रीच्या स्वरुपात मानवीकरण	डॉ. पौर्णिमा चंद्रकांत मोटे	180
3.	वेदवाङ्मयातील स्त्रीरूपात वर्णिलेल्या निसर्ग देवता	ओंकार रमेश पाठक	185
4.	उत्तररामचरित नाटकातील प्रमुख स्त्री पात्रे व भवभूतीचा स्त्री-विषयक दृष्टीकोन	शिदोरे ऋचा रवींद्र	190
5.	भासाच्या नाटकांतील स्त्री भूमिका	डॉ. मृणालिनी आबासाहेब शिंदे	195
6.	Contribution of Women Inrigveda	Akanksha Nitin Joshi	203
7.	भारतीय सामाजिक जीवन मे द्रौपदी के विचार	सत्येंद्र संगाप्पा राऊत	206
8.	आद्या राष्ट्रप्रशासिका कुमारिका	रुपाली रघुनाथ वाडेकर	209
9.	बाणलिखितः कादम्बर्यो स्त्री जीवनम्	जान्हवी भगवान कुलकर्णी	211
10.	कवि कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् या नाटकातील स्त्री पात्र- शकुन्तला	अमृता गजानन तारे	222
11.	पंडिताक्षमा राव यांच्या स्त्रीवादी संस्कृत लघुकथा	डॉ. कल्पना आठल्ये	227
12.	संस्कृत साहित्यातील स्त्रियांचे शैक्षणिक योगदान	विजया द. जगताप	233
13.	संस्कृत भाषेतील प्राचीन स्त्री पुरुष समानतावादी दृष्टीकोन	शिवम् कुलकर्णी	237
14.	Gangadevi A Great Poetess	Prachi Abhijit Shikhare	242
15.	कालिदासाच्या नाटकातील स्त्रियांचे स्थान आणि लिंगभाव एक अभ्यास	श्रद्धा प्रकाश मुळगुंद	248

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

अक्षर वाङ्मय : ISSN : 2229-4929

भारतीय सामाजिक जीवन मे द्रौपदी के विचार

सत्येंद्र संगाप्पा राऊत

जवाहर महाविद्यालय, अणदूर

भारतीय आर्य संस्कृति में स्त्रियों का स्थान बडे ही महत्व का है। आर्य शास्त्रोंने स्त्रियोंको ऊँचा स्थान दिया है, साथही उनके जीवनको संयम तथा सेवासे अनुप्रणीत कर पवित्रतम बनाने कि चेष्टा की है, कुंती जैसी आदर्श माता, दमयंती जैसी आदर्श पत्नी, सावित्री जैसी आदर्श सती, आदर्श त्यागमयी, आदर्श भगिनी आदर्श संयममयी, आदर्श सेवामयी, आदर्श बलिदानमयी, आदर्श वीरांगना, आदर्श लोकहितैषिणी, आदर्श राजनीति निपुणा, आदर्श कार्यकुशला, आदर्श गृहिणी और आदर्श पतिव्रता निर्माण करने की शिक्षा वेदादि शास्त्रोंसे उनको मिली और वे सभी हमारे लिए परम आदर्श है तथा जगत के इतिहास में सर्वथा विलक्षण और अनुकरणीय है। पतिव्रता शुभा, पतिव्रता सुकला, पतिव्रता शाण्डिली, पतिव्रता सावित्री, पतिव्रता दमयंती, सती लोपामुद्रा, अहिल्या, तारा, मंदोदरी, विश्पला, गार्गी, मैत्रेयी और माता कुंती आदि के इतिहास और स्त्री के पवित्रतम चरित्र, उसके त्याग- बलिदान, उसके उच्चाती उच्च जीवन का बडे मधुरता के साथ गगनभेदी गंभीर स्वरमें गौरवगान कर रहे है।

भारतीय समाज में नारी का मातृत्व महनीय और गौरवपूर्ण रहा है. **"जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी** अर्थात् नारी का मातृत्व महनीय और अतिश्रध्देय है, तो कन्यारत्न भगिनीत्व और भार्यत्व भी कम सामान्य नही है। द्वार भी कहा गया है। आचरण और चारित्र की भ्रष्टता नारी ही नही नर को भी हेय और निंद्य बना देती है, और उस स्थिती में वे दोनों ही समाज के लिए अभिशाप बन जाते है । यह बात अलग है कि पुरूष प्रधान समाज अपनी कमजोरी भी नारी के मथ्थे मढ़ दे। आज भी स्त्रियों पर पुरूषों के आधिपत्य और अत्याचार के वृत्तान्त ही अधिक मिलते है । समाज की बराबर की हिस्सेदार वाली नारी आज भी **न स्वातन्त्र्यमर्हति** के शिकंजे मे कसी हुई है। परन्तु महाभारत क अनुशीलन से हमे ज्ञात होता है कि तात्कालिन समाज नारी के प्रति आज भी कही अधिक उदार था।

महाभारत में जिन नारियों का उल्लेख हुआ है उनमे दायित्व बोध और अधिकार अनुकुलन की क्षमता विद्यमान थी। द्रौपदी द्वारा राजकोष का दायित्व संभालना और गान्धारी का मन्त्रणा सभा मे साहयर्च इसी तथ्य को प्रकाशित करते है । उस काल की नारीयों पूर्ण अर्थो में पुरूष की कर्मसंगिनी थी । महाभारत मे जिन नारी चरित्रों से हमारा परिचय होता है, उनका स्वरूप केवल नारीत्व तक की सीमित नही है अपितु उनका पुरूषत्व भी पूर्णतः प्रकाशित है । अपने नारीत्व और पौरषत्व से वे समाज को महत्पूर्ण ढंग से प्रभावित करती है।

PRINCIPAL
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

यदि हम महाभारत का अध्ययन करे तो एक जागृत्व स्त्रीत्व के आविष्कार के रूप में द्रौपदी हमारे सामने आती है । जागृत नारीत्व की वह मूर्ती खुद भी जीवन भर प्रयत्नवादी थी और उसने मानव जाती को भी ऐसा ही सन्देश दिया की अपना कर्तव्य निष्ठापूर्वक निभाओं । हताश मत होओ । और सतत परिश्रम करते रहो ।

रामायण-महाभारत में नारी -व्यक्तित्व के नैतिक वर्णन में मुख्यत: उसके पातिव्रत का उल्लेख हुआ है। यों उसके व्यक्तित्व में शारीरिक सौन्दर्य का विशेष महत्व है ही । महाभारत की प्रधान नायिका द्रौपदी में दूसरी विशेषताओं के साथ-साथ पतिपरायणता के गुण का भी पूर्ण योग है । इस संबंध में सीता का आदर्श तो अतुलनीय है ही। दूसरे आख्यानों में दमयन्ती, सावित्री आदि के नाम उल्लेखनीय है। वनपर्व के एक स्थल में द्रौपदी तथा सत्यभामा का रोचक संवाद है । सत्यभामा ने पूछा - ' हे प्रियदर्शने ! इसका क्या रहस्य है कि पांडव सदा तुम्हारे अधीन रहते है और सबके सब तुम्हारी प्रशंसा करते है। मुझे भी ऐसा व्रत, तप, स्नान, मंत्र, औषध आदि बताओ जिससे में कृष्ण को सदैव वश में रख सकू। द्रौपदीने उत्तर दिया कि 'पति को वश में करने के ये उचित उपाय नहीं है ।' फिर उचित उपाय क्या है ? ' द्रौपदीने अपने व्यवहार एवं स्वभाव के संकेत के बहाने तथाकथित उचित उपायों का निर्देश किया । द्रौपदीने कहा - मै अहंकार और काम-क्रोध को छोड़कर सदा सावधानी के साथ सब पांडवों की और उनकी अन्यान्य स्त्रियों की भी सेवा करती हूँ। अपनी इच्छाओं का दमन करके, मन को अपने आपमें समेटे हुए, केवल सेवा की इच्छा से ही अपने पतियों का मन रखती हूँ । अहंकार और अभिमान की अपने पास नहीं फटकने देती । कभी मेरे मुख से कोई बुरी बात न निकल जाये, इसकी आशंका से सदा सावधान रहती हूँ । असभ्य की भांति कहीं खड़ी नही होती, निर्लज्ज की तरह सब ओर दृष्टि नहीं डालती । बुरी जग पर नही बैठती । दुराचार से बचती तथा चलने-फिरने में भी असभ्यता न हो जाय इसलिए सतत सावधान रहती हूँ। खेत से, वन से अथवा गाँव से जब कभी मेरे पति घर पधारते हैं, उस समय मैं खड़ी होकर उनका अभिनन्दन करती हूँ तथा आसन और जल अर्पण करके उनके स्वागत-सत्कार में लग जाती हूँ ।

भारतीय साहित्य की नायिकाओं में अपनी तेजस्विता के कारण द्रोपदी एक विशेष स्थान है । जगह-जगह उसने संकट-ग्रस्त युधिष्ठिर को उचित सीख भी देने का प्रयत्न किया है। द्रौपदी दर्शनीय थी, विदुपी थी और पतिव्रता तथा पतिप्रिया थी । फिर भी युधिष्ठर के सामने अपने व्यावहारिक सुझाव रखते हुए वह इसका पर्याप्त धान्य रखती थी कि कही युधिष्ठिर का पुरूष-हृदय अपमान न महसूस करे । वनपर्व में एक स्थान पर द्रौपदी ने युधिष्ठर को समझाते हुए जो बहुत-सी बातें कहीं, उनमें यह भी थी कि क्षत्रिय को एकान्त क्षमाशील नहीं होना चाहिए -

यो न दर्शयत तेज: क्षत्रिय: काल आगते,
सर्वभूतानि तं पार्थ सदा परिभवन्त्युत ।

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist. Osmanabad

जो क्षत्रिय समय आने पर अपने प्रभाव को नहीं दिखाता, उसका सब प्राणी सदा तिरस्कार करते है । आजीवन कष्टों को सहकर भी अपने बच्चो को सुसंस्कार देना तथा उनमे उत्साह का संचार करना एकमात्र यही उद्देश उसकी नजर के सामने था और इस ध्येय को साध्य करने के लिए ही उसने आपने जीवन की इति कर्तव्या मानी ऐसी थी माता कुन्ती और द्रौपदी इन्ही दोनों के आदर्श नारियों की वजह से आज का नारी समाज अपने आप मे भी गर्व अनुभव करता है ।

रामायण की भांति महाभारत भी भारतीय जनजीवन और साहित्य को हजारो वर्षो से प्रभावित कर रहा है। यह भारतीय संस्कृती का अनुपम प्रकाशस्तंभ है। इसप्रकार भारतीय संस्कृती का विचार वेदकाल से किया गया है। अत: भारतीय समाज जीवन में द्रौपदी जीवनविषयक विचारों का योगदान संस्कृत साहित्य से मिला है।

संदर्भ ग्रंथ :

१) संस्कृत साहित्य का इतिहास - डॉ. शशी तिवारी

२) भारतीय संस्कृती - डॉ. देवराज

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad